केन्द्रीय पुस्तकालय में हिन्दी पखवाड़ा समारोह

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मुंबई के केन्द्रीय पुस्तकालय में हिन्दी पखवाड़ा समारोह २०१६ के अवसर पर एक तकनीकी हिन्दी संगोष्ठी और हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। पुस्तकालय में पहली बार इस एक दिवसीय तकनीकी हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन ६ सितम्बर २०१६ को किया गया जिसका विषय था – लोकोपयुक्त प्रौद्योगिकी के विकास में जनभाषा हिन्दी की अनिवार्य भूमिका । संगोष्ठी में संस्थान के गणमान्य प्राध्यापकों और अधिकारियों ने भाग लेकर तकनीकी हिन्दी के संबंध में अपने बहुमूल्य विचारों से उपस्थित प्रतिभागियों का संबोधन और सारगर्भित चर्चा प्रस्तुत किया । प्रा. एस.वी.कुलकर्णी ने संगोष्ठी की अध्यक्षता किया और डॉ विनोदकुमार प्रसाद ने संगोष्ठी का मुख्य अभिभाषण दिया। प्रा. अनिन्द्य दत्ता, प्रा. शांतनु घोष, प्रा. अखिल रंजन, श्री मधुकर शिदे, श्रीमती वैशाली बहुलकर प्रभृति ने इस संगोष्ठी में अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए हिन्दी भाषा का उत्तरोत्तर प्रयोग करने का प्रोत्साहन दिया । श्रीमती बहुलकर ने राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर बल देते हुए संस्थान में हिन्दी में किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया और हिन्दी भाषा की निहित क्षमताओं को उजागर करते हुए आशा व्यक्त किया कि अनेक अवरोधों के बावजूद हिन्दी यद्यपि मंथर गति से किन्तु उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। प्राध्यापक अनिन्द्य दत्ता ने राजाराममोहन राय के योगदान का उदारण प्रस्तुत करते हुए उपस्थित जनसमूह को प्रोत्साहित किया कि यदि हमारी चाहत हो तो हम कोई भी भाषा अंगीकार कर के उसमें अपना दैनिक कार्य और साहित्य का सृजन कर सकते हैं जैसे बांग्लाभाषी होते हुए भी राजाराममोहन राय ने अपने युग में हिन्दी भाषा के लिए योगदान किया । प्रा. शांतनु घोष ने अपने संबोधन में हिंगलिश (हिन्दी और इंग्लिश की मिश्रित भाषा) का पक्ष प्रस्तुत करते हुए वर्तमान परिस्थितियों में दोनो ही भाषाओं का समुचित प्रयोग करने का आग्रह किया ताकि देश की भाषिक विविधता को आलोक में अन्तराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा का प्रयोग सुनिश्चित किया जा सके। श्री शिंदे ने अपने संबोधन में राजभाषा हिन्दी में कार्यकरने के लिए प्रेरित करते हुए अपने स्वयं के कार्यालयीन जीवन की अनुभूतियों को साझा किया और जोर देते हुए कहा कि यदि ठान लिया जाए तो हिन्दी में काम करना बहुत आसान है और काम करने के लिए अलग से पुरस्कार और प्रोत्साहन भी सरकार की ओर से मिलता है । अपने अत्यंत संक्षिप्त संबोधन में उन्होंने लोगों को निश्चित रूप से प्रेरित किया ।

डॉ विनोदकुमार प्रसाद ने लोकोपयुक्त प्रौद्योगिकी के विकास में जनभाषा हिन्दी की अनिवार्य भूमिका को रेखांकित करते हुए अत्यंत सारगर्भित व्याख्यान दिया। उन्होंने राष्ट्रकवि दिनकर के हवाले से एक प्रश्न उपस्थित किया कि *हम कौन थे। क्या हो गये हैं । और क्या होंगे अभी । आओ विचारे आज मिल कर ये समस्याएँ सभी ।* लोकोपयुक्त प्रौद्योगिकी के विकास में जनभाषा हिन्दी की अनिवार्य भूमिका जैसे विषय की महत्ता रेखांति करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में प्रौद्योगिकी एक

महत्वपूर्ण कारक है। एतदर्थ ऐसे विषय के चयन में निम्नांकित महत्वपूर्ण विन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंन विषय के शीर्षक का प्रतिपादन किया । उनका मानना है कि -

- हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं जिसका संचालन प्रौद्योगिकी के हाथों में है । यह काल तेजी से बदलने वाली प्रौद्योगिकी के कारण अनिश्चित और विछुब्ध है । गलाकाट प्रतियोगिता का दौर है । अत: प्रौद्योगिकी का ज्ञान हमारे लिए लगभग अनिवार्य है ।
- हम एक ज्ञानाधारित अर्थव्यवस्था में जी रहे हैं । अत: आम जनता को उनकी अपनी भाषा में शिक्षित किए बगैर अर्थव्यवस्था में सुधार और देश से गरीबी का उन्मुलन नहीं किया जा सकता ।
- अर्थशास्त्रियों की तुलना में सर्वसाधारण जनता अपने देश की अर्थव्यवस्था को बेहतर समझती है । अत: सर्वसाधारण की भाषा को महत्व देना ही होगा ।
- काले हंसों से सावधान रहने की जरूरत है ।
- सत्य की उपेक्षा करने से सत्य बदलता नहीं है ।

उपरोक्त विन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में भाषा की भूमिका स्पष्ट करते हुए जोर दिया गया कि मानव सभ्यता का चाहे कितना ही वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय विकास क्यों न हो जाए, उत्तरोत्तर परिवर्तन और विकास के कारण नवोद्भूत भावों, विचारों और संकल्पनाओं के संप्रेषण और विचार-विनिमय का माध्यम जनभाषा ही रहेगी। जनभाषा चूँकि जीवन के विविध कार्यकलापों में महत्वपूर्ण और केन्द्रीय भूमिका निभाती है इसीलिए शायद अत्यधिक परिचय के कारण हम उसे दुर्लक्ष्य कर देते हैं । किन्तु यह सत्य है कि जनभाषा का विवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग करके हम न केवल रूढ़ियों, कुसंस्कारों और आपसी मतभेदों को मिटा सकेंगे, अपितु राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना जागृत कर के आतंकवाद जैसी समस्याओं का भी निवारण कर सकेंगे । आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का प्रचार-प्रसार जनभाषा में होने से जनभागीदारी बढ़ेगी और विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। लोकोपयुक्त प्रौद्योगिकी का विकास सुनिश्चित किया जा सकेगा । किन्तु यदि भाषा को विवाद का विषय बनाया जाएगा तो आर्थिक और समाजिक विकास तो बाधित होगा ही देश का सामाजिक ताना-बाना भी बिखर जाएगा । कुछ हद तक हम इसका अनुभव कर भी रहे हैं । प्रगति की दिशा आगे बढ़ने के स्थान पर एक सीमित दायरे में गोल-गोल घूम रही है । मुट्ठी भर लोगों के विकास को संपूर्ण देश के विकास का पैमाना नहीं माना जा सकता है । जनभागीदारी सुनिश्चित करने से ही इस स्थिति में सुधार लाया जा सकता है ।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ भाषा का एक अटूट संबंध है । जिस देश और जाति का विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी ज्ञान जितना अधिक उन्नत रहा है, उसकी भाषा भी उतनी ही समुन्नत रही है । पारंपरिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व में भारत का स्थान सर्वोपरि था और भाषा अध्ययन की भी अत्यंत प्राचीन और समृद्ध परंपरा थी । क्लासिकी भाषाओं में लैटिन और ग्रीक की अपेक्षा संस्कृत सर्वाधिक व्यवस्थित, समुन्नत और वैज्ञानिक भाषा थी, किन्तु आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जिस प्रकार

भारत का योगदान नगण्य है, ठीक उसी प्रकार आधुनिक भारतीय भाषाओं का योगदान भी नगण्य ही है । भाषा समस्या के कारण सार्वदेशिक स्तर पर ज्ञान-विज्ञान का प्रचार-प्रसार भी ठीक से नहीं हो पाता है । जहाँ मुठ्ठी भर लोग अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रथम श्रेणी की आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, वहीं अधिसंख्य लोगों को प्रादेशिक अथवा वर्णाकुलर भाषाओं के माध्यम से द्वितीय अथवा तृतीय दर्जे की शिक्षा से ही संतोष करना पड़ रहा है । प्रशासनिक कार्य की भाषा, लोक-संर्पक की भाषा और शिक्षण माध्यम की भाषा में व्यापक असमानता होने से अपेक्षित विकास भी बाधित है तथा सभी भारतीय भाषाओं में अपेक्षित सामंजस्य न होने के कारण स्वातंत्र्यप्राप्ति के लगभग ७० वर्षों के बाद भी विदेशी भाषा अंग्रेजी का वर्चस्व ज्यों का त्यों कायम है । वर्तमान परिस्थितियों में देश की प्रगतिमूलक आत्मनिर्भरता के लिए ज्ञान-विज्ञान का शिक्षण-प्रशिक्षण जनभाषा के माध्यम से किया जान अनिवार्य है ताकि लोकोपयुक्त प्रौद्योगिकी के विकास पर बल दिया जा सके ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रा. कुलकर्णी ने हिन्दी भाषा के महत्व को रेखांकित करने के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार और अनिवार्य भूमिका को देखते हुए उसका भी समानांतर प्रयोग करने का सुझाव दिया । उनका मानना था कि अंग्रेजी भाषा का उसकी निहित आवश्यकताओं के कारण प्रयोग निरंतर जारी रहेगा किन्तु साथ ही साथ हमें हिन्दी समेत सभी भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने की जरूरत है । उन्होंने विभिन्न कामर्शियल कार्यों में हिन्दी के उपयोग को रेखांतिक किया और स्पष्ट किया कि हिन्दी सिनेमा ने हिन्दी को जागतिक स्तर पर पहुँचा दिया है । हिन्दी अब सभी वर्गों में बोली और समझी जाती है। हमें इसके विकास में और अधिक योगदान करना चाहिए ।

डॉ रंजितकुमार दास ने संगोष्ठी का संचालन किया और प्रकारांतर से हिन्दी भाषा के प्रयोग-प्रसार में पुस्तकालय के योगदान को रेखांकित किया । उनका मानना है कि पुस्तकें मनुष्य का सबसे अच्छी मित्र होती हैं एतदर्थ उन्होंने अच्छी पुस्तकों के उपयोग पर बल देते हुए लोगों का आवाहन किया कि पुस्तकालय द्वारा आयोजित हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी का लाभ उठाएँ और अपने लिए अच्छी पुस्तकें खरीदें । साथ ही उन्होनें यह भी आग्रह किया कि पुस्तकालय के संग्रह हेतु अच्छी हिन्दी पुस्तकों का सिफारिश भेजें और चयन कर के भी पुस्तकालय की मदद करें ।

कुल मिलाकर यह एक सफल संगोष्ठी रही और केन्द्रीय पुस्तकालय के इतिहास में इसका पहली बार सफल आयोजन किया गया । सभी प्रतिभागियों ने इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रसंशा किया और भविष्य में इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन को नियमित करने का आग्रह किया । अपने धन्यवाद ज्ञापन में संस्थान की जनसंपर्क अधिकारी सुश्री फाल्गुनी नाहा ने बंबईया हिन्दी का स्मरण करते हुए मुंबई की विशेष हिन्दी भाषा को याद किया। उनका स्पष्ट मत था कि किसी भी भाषा को शुद्धरूप में प्रयोग करना अत्यंत श्रमसाध्य काम है और उन्हें भी आरंभ में ऐसा जरूर लगा था किन्तु हिन्दी का प्रवाह ऐसा है कि उसे कोई भी आसानी से प्रयोग कर सकता है । एतदर्थ कार्यालय के काम में हिन्दी का प्रयोग निश्चय ही अपने अपने स्तर पर बढ़ाया जा सकता है ।

उन्होंने सभी वक्ताओं का प्रेरणादायी व्याख्यान देने के लिए धन्यवाद किया । डॉ दास और श्रीमती बहुलकर का विशेष आभार प्रकट किया और उपस्थित प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए संगोष्ठी का समापन किया।

संगोष्ठी के फोटोग्राफ एवं वीडियो यहाँ देखे जा सकते हैं -